Patrika (Indore), 23rd August 2024, Page – 05

#NationalSpaceDay: अंतरिक्ष के क्षेत्र में स्कूली बच्चों से लेकर युवाओं तक की बढ़ रही रुचि, संस्थानों ने भी बढ़ाए कदम

स्पेस सेक्टर... शहर में डिग्री के साथ इसरो में इंटर्नशिप का मौका

सुरभि भावसार
patrika.com

इंदौर. अंतरिक्ष विज्ञान में युवाओं की रुचि बढ़ रही है। इसरो के चंद्रयान-2 मिशन की सफलता से विद्यार्थी प्रेरित हुए हैं। इसका प्रमाण है कि आइआइटी इंदौर और एसजीएसआइटीएस जैसे प्रमुख संस्थानों में स्पेस पाठ्यक्रमों की मांग तेजी से बढ़ रही है। संस्थानों ने भी अंतरिक्ष विज्ञान और रिमोट सेंसिंग के पाठ्यक्रम शुरू किए हैं, जिनमें बड़ी संख्या में एडमिशन हो रहे हैं। प्रो. विवेक शर्मा बताते हैं कि इन पाठ्यक्रमों में विद्यार्थियों को अंतरिक्ष में प्रक्षेपण, रॉकेट इंजीनियरिंग, उपग्रह तकनीक और ग्रहों की खोज के बारे में जानकारी दी जा रही है। उन्हें इसरो जैसे संस्थानों में काम करने का अवसर भी मिल रहा है।

स्पेस रिसर्च कर रहे आइआइटी के विद्यार्थी

आइआइटी ने 2015 में डिपार्टमेंट ऑफ एस्ट्रोनॉमी, एस्ट्रोफिजिक्स और स्पेस इंजीनियरिंग की शुरुआत की थी। यहां बीटेक इन स्पेस साइंस एंड इंजीनियरिंग व एमएससी और एमटेक इन एटमॉसफियरिक साइंस जैसे प्रोग्राम संचालित किए जा रहे हैं। विद्यार्थी इलेक्टिव पाठ्यक्रम और रिसर्च प्रोजेक्ट से स्पेस इंस्ट्रूमेंटेशन, रिमोट सेंसिंग एंड एटमॉसफियरिक इंजीनियरिंग, एस्ट्रोनॉमी और एस्ट्रोफिजिक्स में स्पेशलाइजेशन प्राप्त कर सकते हैं। हाल ही में एस्ट्रोनॉमी, एस्ट्रोफिजिक्स एंड स्पेस इंजीनियरिंग में एमटेक करने वाली क्रिशंगी कश्यप ने चांद की सतह पर रिसर्च की है। वह अपनी पीएचडी प्लेनेटरी सर्फेस स्टडी पर करेंगी।

अंतरिक्ष थीम पर सजाया रूम

5वीं के छात्र रयांश अरोड़ा हमेशा से तारों व ग्रहों के रहस्यों को जानने उत्सुक रहते हैं। वे कहते हैं कि चंद्रयान-2 मिशन ने मुझे सिखाया है कि असफलता के बावजूद प्रयास करते रहना कितना जरूरी है। रयांश ने रूम को अंतरिक्ष थीम पर सजा रखा है।

एसजीएसआइटीएस में सर्टिफिकेट कोर्स

एसजीएसआइटीएस से संचालित इंडियन सोसायटी ऑफ रिमोट सेंसिंग (आइएसआरएस) ने स्पेस और मशीन लर्निंग के कुछ सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम शुरू किए हैं। इसमें विद्यार्थियों को रिमोट सेंसिंग, जीआइएस (जिओग्राफिकल इंफॉर्मेशन सिस्टम) और जीपीएस (ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम) सैटेलाइट सिस्टम के बारे में जानकारी दी जाएगी। दरअसल, इसरो अपने स्पेस मिशन को आगे बढ़ाने और सैटेलाइट तकनीकों के लिए युवाओं की मदद लेना चाहता है। ऐसे में युवाओं को अंतरिक्ष के प्रति आकर्षित करने और बेहतर नॉलेज देने के लिए सर्टिफिकेट कोर्स चला रहा है। ऑनलाइन होने वाले इन कोर्सेस में विद्यार्थियों को सीनियर साइंटिस्ट की मेंटरशिप मिलेगी। खास बात यह है कि इसी सेक्टर में अपना भविष्य बनाने वाले विद्यार्थियों को इसरो इंटर्नशिप का मौका भी देगा, जिससे वे प्रैक्टिकल नॉलेज प्राप्त कर सकेंगे।

आइआइटी इंदौर में राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस का आयोजन

पोस्टर प्रदर्शनी से बताई भारत की अंतरिक्ष में प्रगति

इंदौर @ पत्रिका. चंद्रमा पर चंद्रयान की ऐतिहासिक लैंडिंग के स्मरणोत्सव के उपलक्ष्य में आइआइटी इंदौर ने राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस मनाया। इस साल की थीम 'चंद्रमा को छूते हुए जीवन को छूना भारत की अंतरिक्ष गाथा' थी। इसमें बताया कि हमारा अंतरिक्ष कार्यक्रम कैसे विकसित हो रहा है।

खगोल विज्ञान, खगोल भौतिकी एवं अंतरिक्ष अभियांत्रिकी विभाग ने बुधवार को राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस का जश्न मनाया। विभिन्न कार्यक्रमों से युवाओं में अंतरिक्ष के बारे में जिज्ञासा जगाई। विभिन्न स्कूल-कॉलेजों के 350 से ज्यादा विद्यार्थियों ने भाग लिया। लैस जोड़ने से लेकर अंतिम उत्पाद को पूरा करने तक, अपनी स्वयं की खगोलीय दूरबीन बनाने के रोमांच का भी अनुभव किया।

पोस्टर प्रदर्शनी में भारत के अंतरिक्ष अभियानों के इतिहास और भारतीय अंतरिक्ष वैज्ञानिकों के अग्रणी योगदान को प्रदर्शित किया। विज्ञान मॉडल भी शामिल थे। मुख्य आकर्षण एक विशेष टेलीस्कोप से सौर अवलोकन करना था। छात्रों को सूर्य में होने वाले सौर धब्बों की झलक पाने का अवसर मिला। इसके बाद संवादात्मक प्रश्नोत्तरी सत्र आयोजित हुआ, जिसमें प्रतिभागियों से अंतरिक्ष विज्ञान और खगोल विज्ञान सहित विभिन्न विषयों पर प्रश्न पूछे गए।

इसरो के पूर्व अध्यक्ष वर्चुअल रूप से शामिल

कार्यक्रम में इसरो के पूर्व अध्यक्ष एएस किरण कुमार वर्चुअल रूप से शामिल हुए। पिछले कुछ दशकों में इसरो की यात्रा और भारत की अंतरिक्ष यात्रा में योगदान के लिए युवाओं की संभावनाओं को साझा किया। आइआइटी इंदौर के निदेशक प्रो. सुहास एस. जोशी ने भारत की अंतरिक्ष क्रांति में योगदान देने के लिए आइआइटी इंदौर द्वारा उठाए गए कदम की जानकारी दी।

आज दिल्ली में होंगे पुरस्कृत

इसके अलावा आइआइटी इंदौर ने ऑनलाइन स्पेस हैकथॉन शुरू करने के लिए आईईईई जीआरएसएस और एमपीसीएसटी, भोपाल के साथ सहकार्य किया है। खगोल विज्ञान, खगोल भौतिकी एवं अंतरिक्ष अभियांत्रिकी विभाग, आइआइटी इंदौर के दो पीएचडी छात्रों की एक टीम ने इसरो द्वारा आयोजित राष्ट्रव्यापी भारतीय अंतरिक्ष हैकथॉन में भी भाग लिया और तीसरा पुरस्कार जीता। इन विद्यार्थियों को शुक्रवार को नई दिल्ली के भारत मंडपम में राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस समारोह के दौरान पुरस्कृत किया जाएगा।